पाठ 6

क्यों क्यों लड़की

(प्रस्तुत पाठ में एक आदिवासी लड़की के विचारों में जिज्ञासा, जीवन संघर्ष तथा कार्य करने की लगन को रोचक संवाद शैली में प्रस्तुत किया गया है|)

'पर क्यों?'

छोटी सी लड़की थी वह, करीब दस साल की| एक बड़े से सांप का पीछा कर रही थी| मैं उसके पीछे भागी, उसकी चोटियाँ पकड़ घसीट कर लायी, उस पर चिल्लाई, ' ना मोइना, ना !'

'क्यों?' उसने पूछा|

'वो कोई धामन -वामन नहीं है, नाग है, नाग !

'तो नाग को क्यों न पकडूँ?'

'क्यों?'

अरे 'काट लेगा'

'नहीं, इस बार नहीं|'

'पर क्यों ?'

मैं उसे ऑफिस तक घसीट कर लायी| वहां उसकी माँ खीरी एक टोकरी बुन रही थी|

'चलो थोडा आराम कर लो ' मैंने कहा|

'क्यों ?'

'क्यों नहीं ? थकी नहीं हो क्या ?'

मोइना ने सिर हिलाया| 'बाबू की बकरियां कौन घर लाएगा ? और लकड़ी लाना, पानी लाना, चिड़िया पकड़ने का फंदा लगाना, ये सब कौन करेगा?'

खीरी ने कहा, 'बाबू ने जो चावल भेजा है, उसके लिए उसे धन्यवाद देना न भूलना|'

'क्यों? क्यों दूँ धन्यवाद उसे ? उसकी गोशाला धोती हूँ, हजारों काम करती हूँ उसके लिए कभी धन्यवाद देता है, मुझे? मैं क्यों उसे धन्यवाद दूँ ?'

मोइना अपने काम पर भाग गयी| खीरी सिर हिलाती रह गयी| 'ऐसा बच्चा नहीं देखा कभी| बस कहती रहती है 'क्यों ? क्यों ? - गाँव के पोस्टमास्टर ने तो उसे 'क्यों -क्यों लड़की' का नाम दे रखा है|'

'मुझे तो अच्छी लगती है मोइना|'

'इतनी जिद्दी है कि एक बात पकड़ ले तो उससे हटती नहीं|'

मोइना आदिवासी लड़की थी, शबर जाति की| शबर लोग गरीब और भूमिहीन थे पर बाकी शबर लोग कभी शिकायत करते सुनायी नहीं देते थे, सिर्फ मोइना ही थी जो सवाल पर सवाल करे जाती।

‘क्यों मुझे मीलों चलना पड़ता है; नदी से पानी लाने के लिए? क्यों रहते हैं; हम पत्तों की झोपड़ी में? हम दिन में दो बार चावल क्यों नहीं खा सकते?’

मोइना गाँव के बाबुओं की बकरियाँ चराने का काम करती, पर न तो वह अपने आप को दीन-हीन समझती, न ही मालिकों का अहसान मानती। वह अपना काम करती, घर आ जाती, और बुदबुदाती रहती, ‘क्यों उनका बचा-खुचा खाऊँ मैं? मैं तो बढ़िया खाना बनाऊँगी शाम को। हरे पत्ते, चावल, केकड़े और मिर्ची वाला-और सारे घर वालों के साथ बैठ कर खाऊँगी।’

वैसे शबर लोग आम तौर पर अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं, पर मोइना की माँ एक पैर से लँगड़ाती थी। वह ज्यादा चल फिर नहीं सकती थी। उसके पिता दूर जमशेदपुर काम की तलाश में गये हुए थे और उसका भाई गोरो जलाऊ लकड़ी लाने जंगल जाता था। सो, मोइना को भी काम पर जाना पड़ता था।

उस अक्टूबर में मैं समिति के साथ वहाँ पूरा एक माह रुकी। एक सुबह मोइना ने घोषणा की कि वह समिति वाली झोपड़ी में मेरे साथ रहेगी।

‘बिल्कुल नहीं,’ खीरी ने कहा।

‘क्यों नहीं, इतनी बड़ी झोपड़ी है। एक बुढ़िया को कितनी जगह चाहिए?’

‘तुम्हारे काम का क्या होगा?’

‘काम के बाद आया करूँगी।’

और वह एक जोड़ी कपड़े और एक नेवले का बच्चा लिये आ पहुँची। 'ये बस जरा-सा खाता है और बुरे साँपों को दूर भगा आता है,' उसने कहा। 'अच्छे वाले साँपों को मैं पकड़ कर माँ को दे देती हूँ।'

हमारी समिति की शिक्षिका मालती बोनाल ने मुझसे कहा, 'आप तो तंग आ जायेंगी इसकी 'क्यों-क्यों' सुनते हुए।' और वाकई, वह अक्टूबर ऐसा बीता कि पूछो मत! क्यों मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी पड़ती हैं? उसके लड़के खुद ही कर सकते हैं। मछलियाँ बोल क्यों नहीं पातीं ?

अगर कई सारे तारे सूरज से भी बड़े हैं तो वो इतने छोटे क्यों नजर आते हैं? 'और हर रात को तुम सोने के पहले किताबें क्यों पढ़ती हो ?'

'क्योंकि किताबों में तुम्हारी 'क्यों-क्यों' के जवाब मिलते हैं।'

इस एक बार मोइना चुप रही। उसने कमरा ठीक-ठाक किया रंगन के फूलों वाले झाड़ को पानी दिया, नेवले को मछली दी। फिर उसने कहा, 'मैं पढ़ना सीखूँगी और अपने सारे सवालों के जवाब ढूँढ़ निकालूँगी।'

जो-जो वह मुझसे सीखती, वह बकरियाँ चराते समय दूसरे बच्चों को बताती। 'कई तारे तो सूरज से भी बड़े हैं। सूरज पास है इसलिए बड़ा दिखता है.. मछलियाँ हमारी तरह बातें नहीं करतीं। मछलियों की अपनी भाषा है, जो सुनायी नहीं देती.. तुम्हें पता है, पृथ्वी गोल है।'

एक साल बाद जब मैं उस गाँव में दुबारा पहुँची तो सबसे पहले सुनायी दी मोइना की आवाज। 'स्कूल क्यों बन्द है?' -समिति के स्कूल के अन्दर एक मिमियाती बकरी को अपने साथ घसीटते हुए उसने मालती को ललकारा।

क्या मतलब है तुम्हारा 'क्यों बन्द है?'

'मैं भी क्यों न पढ़ूँ।'

‘तो तुम्हें रोक कौन रहा है?’

‘पर कोई कक्षा ही नहीं लगी।’

‘स्कूल पूरा हो चुका।’

‘क्यों?’

‘तुम जानती हो मोइना, मैं सुबह नौ से ग्यारह बजे तक कक्षा लगाती हूँ।’

मोइना ने पाँव पटक कर कहा, ‘तुम समय बदल क्यों नहीं सकती? मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी होती हैं, सुबह। मैं तो सिर्फ ग्यारह बजे के बाद ही आ सकती हूँ। तुम पढ़ाओगी नहीं तो मैं सीखूँगी कहाँ से? मैं बूढ़ी माँ को बता दूँगी कि बकरी चराने वाले या गाय चराने वाले, हम में से कोई भी नहीं आ सकेगा, अगर स्कूल का समय नहीं बदला तो।’

तभी उसने मुझे देखा और अपनी बकरी ले भाग खड़ी हुई।

शाम को मैं मोइना की झोपड़ी पर गयी। चौके की अंगार के पास मजे से बैठी मोइना अपनी छोटी बहिन और बड़े भाई को बता रही थी, ‘एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ। खाने के पहले हाथ धो लो, जानते हो क्यों? पेट दर्द हो जायेगा अगर नहीं धोओगे तो। तुम कुछ नहीं जानते हो क्यों? क्योंकि तुम समिति की कक्षा में नहीं जाते।’

तुम्हें क्या लगता है, गाँव में जब प्राइमरी स्कूल खुला तो उसमें दाखिल होने वाली पहली लड़की कौन थी?- मोइना।

मोइना अब अठारह साल की है। वह समिति के स्कूल में पढ़ाती है। अगर तुम उसके स्कूल के पास से गुजरो तो निश्चित ही तुम्हें उसकी बेचैन आवाज सुनायी देगी।

‘आलस मत करो। सवाल करो मुझसे। पूछो, क्यों मच्छरों को खत्म करना चाहिए... क्यों ध्रुवतारा हमेशा उत्तरी आकाश में ही रहता है।’

और दूसरे बच्चे भी अब सीख रहे हैं पूछना- ‘क्यों?’

वैसे मोइना को पता नहीं है कि मैं उसकी कहानी लिख रही हूँ। अगर उसे बताया जाये तो कहेगी, 'क्यों'? मेरे बारे में? क्यों?'

-महाश्वेता देवी

महाश्वेता देवी का जन्म 14 जनवरी सन् 1926 ई0 को ढाका (बांग्लादेश) में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा ढाका और कोलकाता में हुई। साहित्य के प्रति बचपन से आपका लगाव था। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'झाँसी की रानी', 'अरण्येर अधिकार' 'हजार चैरासी की माँ', 'चोट्टि मुंडा और उसका तीर', 'अग्निगर्भ', 'अक्लांत कौरव', 'सूरज गहराई', और 'मास्टर साब' आदि है। उनकी रचनाओं की कथावस्तु में आदिवासियों का जीवन संघर्ष और उनकी पीड़ा है। महाश्वेता देवी को उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, मैग्सेसे आदि प्रमुख हैं। इनकी मृत्यु सन् 28 जुलाई 2016 को कोलकाता में हुई थी।

शब्दार्थ

धामन=साँप की एक जाति। **गोशाला**=गाय के रहने का स्थान। **अहसान**=उपकार। **बुदबुदाना**=बड़बड़ाना। **घोषणा**=जोर से बोलकर जताना, ऐलान। **ललकारना**=विपक्षी को लड़ने की चुनौती देना।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. मोइना अपने छोटे भाई और बहिन को बताती है कि- "एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ", "खाने के पहले हाथ धो लो।" आप भी कम से कम तीन बातें लिखिए जो करनी चाहिए।

2. एक पौधा लगाइए और उसके बड़ा होने तक देखभाल कीजिए।

3. पृथ्वी देखने में चिपटी दिखाई देती है किन्तु वह गोल है। इसके साथ-साथ यह अपने अक्ष पर भी घूमती है। अक्ष पर घूमने के कारण दिन और रात होते हैं। सूर्य के चारों ओर घूमने के कारण ऋतुएँ बदलती हैं। अब तक पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन पाया जाता है। पृथ्वी पर जीवन के लिए पेड़-पौधों का होना अतिआवश्यक है। पेड़-पौधों के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

उपर्युक्त अंश को पढ़िए तथा इसके आधार पर पाँच प्रश्न बनाइए।

विचार और कल्पना

1. शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त गरीबी को कैसे दूर किया जा सकता है ? इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

2. प्रश्नों के द्वारा हम किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यदि आप किसी अपरिचित स्थान पर जाते हैं, तो वहाँ आपके मन में कौन-कौन से प्रश्न आयेंगे?

पाठ से

1. मोइना का नाम क्यों-क्यों लड़की क्यों पड़ा ?

2. शबर जाति के लोग आमतौर पर अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं, पर मोइना को काम पर जाना पड़ता था। क्यों ?

3. मोइना ने समिति वाली झोपड़ी में रहने के लिए नेवला ले जाने का क्या लाभ बताया ?

4. "हर रात तुम सोने के पहले किताब क्यों पढ़ती हो ?" मोइना के इस प्रश्न पर लेखिका ने क्या उत्तर दिया ?

5. वे कौन-कौन सी बातें थीं, जो मोइना बकरियाँ चराते समय दूसरे बच्चों को बताती थी ?

6. चैके की अंगार के पास बैठी मोइना ने अपनी छोटी बहिन और बड़े भाई को क्या बताया ?

7. पाठ के अन्त में मोइना कहती है-आलस मत करो सवाल करो मुझसे। "पूछो, क्यों मच्छरों को खत्म करना चाहिए ?"

अगर आपको मोइना से कुछ सवाल पूछने हैं तो कौन-कौन से सवाल पूछेंगे ? उन सवालों को लिख दीजिए।

8. सोचकर लिखिए-अगर मोइना 'क्यों-क्यों' जैसे सवाल न करती तो इसका उस पर क्या प्रभाव पड़ता?

भाषा की बात

1. (क) मोइना हर बात में 'क्यों' से प्रश्न पूछती है। उसी तरह क्या, कब, कैसे, किसने, किसको, कहाँ, किसलिए आदि भी प्रश्न वाचक शब्द हैं जिनका प्रयोग करके हम प्रश्न पूछते हैं। इन शब्दांे का प्रयोग करते हुए पाठ पर आधारित प्रश्न बनाइए।

(ख) इनमें से कुछ शब्दांे का प्रयोग कभी-कभी दो बार भी होता है, जैसे-क्या-क्या, कौन-कौन, कब-कब, कैसे-कैसे, किस-किस और किन-किन। इन पर आधारित प्रश्न बनाइए। जैसे-आपके साथ कौन-कौन विद्यालय जाते हैं?

2. निम्नलिखित वाक्यांशों से एक शब्द बनाइए-

(क) लिखने वाला (ख) चिकित्सा करने वाला

(ग) नृत्य करने वाला (घ) सेवा करने वाला

(ङ) पढ़ने वाला (च) पर्यटन करने वाला

3. व्याकरण की दृष्टि से निम्नलिखित को अलग-अलग वर्गों- विशेषण, भाववाचक संज्ञा तथा क्रियाविशेषण में बाँटिए-

बचपन, बढ़िया, बड़ा, कायरता, दिन भर, तेज-तेज, ज्यादा, जलाऊ।

4. (क) मोइना अच्छी लड़की है।

(ख) मोइना जिद्दी लड़की है।

(ग) मोइना अच्छी किन्तु जिद्दी लड़की है।

ऊपर दिये वाक्यों में पहले दो सरल वाक्य हैं। तीसरा वाक्य पहले दो वाक्यों को जोड़कर बना है। यह संयुक्त वाक्य है। दो शब्दों, पदबन्धों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द 'योजक' कहलाते हैं। यहाँ 'किन्तु' योजक शब्द है। इन्हें 'समुच्चयबोधक' भी कहते हैं। नीचे दिये गये योजक शब्दों की सहायता से वाक्य बनाइए-

किन्तु, और, तथा, तो, यदि, वरना, या।

5.निम्नलिखित शब्दों में 'ता' प्रत्यय जोड़कर भाव वाचक संज्ञा बनाइए-

यथा : कायर - कायरता

सफल ....

योग्य ....

मलिन ....

उदार ....

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं- 1. जाति वाचक 2. व्यक्ति वाचक 3. गुण वाचक

4. भाव वाचक 5. द्रव्य वाचक।

इसे भी जानें

महाश्वेता देवी को ज्ञानपीठ पुरस्कार सन् 1996 ई0 में बंगला साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए तथा मैग्सेसे पुरस्कार सन् 1997 ई0 में साहित्य एवं सृजनात्मक संचार कला के लिए प्राप्त हुआ।